संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप

रत्ती राम रावत, असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्य महिला टी.टी. कॉलेज, अलवर (राज.)

संस्कृति का चित्र अत्यंत व्यापक और गहन है संस्कृति के परिपेक्ष में विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न दृष्टि से अपने अभिमत व्यक्त किए हैं सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि समस्त मानव समाज के किसी क्षेत्र विशेष में प्राप्त की गई उपलब्धियां ही संस्कृति है, संस्कृति मानवता को विशिष्ट बनाने वाली है।

आदर्श संस्कृति का आशय स्पष्ट करते हुए पंडित दुर्गादत्त त्रिपाठी कहते हैं कि संस्कृति संस्कृत भाषा का शब्द है मानव की देह, इंद्रियां, प्राण, मन, बुद्धि और उस समय की उत्तम चेष्टाएं लौकिक पारलौकिक धार्मिक आध्यात्मिक आर्थिक राजनीतिक सभी प्रकार की क्रियाओं का सम्मिलित रूप है। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है जब भी संस्कृति की बात होती है तो एक समय विशेष की मानवीय सम्यक चेष्टा ही संस्कृति कहलाती है।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की मानव संस्कृतियों का अपना एक अलग वजूद रहा है परंतु वैश्वीकरण के कारण आज विभिन्न क्षेत्र की मूल संस्कृति में अन्य संस्कृतियों के मूल्यों का समावेश होता जा रहा है जिसके कारण एक क्षेत्र विशेष की मूल संस्कृति जो कि किसी क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप धार्मिक सिद्धांतों अवधारणाओं को आत्मसात कर उनके मूल्यो के अनुरूप थी वह भी अब अन्य संस्कृति के लोगों के जीवन यापन की गतिविधियों को देखकर उनके मूल्यों को आत्मसात कर रही हैं। जिससे विभिन्न संस्कृतियों के मूल स्वरूप में भिन्नता दिखाई दे रही है। भारतीय संस्कृति का गौरवपूर्ण इतिहास आदिकाल से रहा है। भारतीय संस्कृति मानवीयता पूर्ण नीतियो नियमों सिद्धांतों से पुष्ट मूल्यो पर आधारित रही है। आज वैश्वीकरण के कारण संपूर्ण विश्व एवं संस्कृतियों के लोग एक दूसरे से जुड़ रहे हैं, उसी का परिणाम है कि विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों के सदस्य संपर्क में आ रहे हैं। एवं अपनी संस्कृति के मूल्यो एवं अन्य संस्कृति के मूल्य में से अपनी आवश्यकता अनुरूप मूल्य का चुनाव कर रहे हैं और एक मिली जुली संस्कृति को जन्म दे रहे हैं। संस्कृतियों के इन बदलते स्वरूपों में कुछ संस्कृतियाँ जो मौलिक रूप से संपन्न थी वह अन्य संस्कृतियों के संपर्क में आने से साथ की ओर भी बढ़ रही है वहीं कुछ संस्कृतियों जो जो अपनी जीवन शैली को व्यवस्थित रूप नहीं दे पाई थी अन्य संस्कृतियों के लोगों के संपर्क में आने से संपन्न भी हुई है। अगर संपन्नता से विष्णता की ओर जाने वाली संस्कृति की बात की जाए तो भारतीय संस्कृति भी उसका एक उदाहरण है। जैसे भारतीय संस्कृति का दर्पण समाज में विवाह को सात जन्मों का बंधन माना जाता था और आज भी भारतीय मूल्य एवं संस्कृति में विश्वास रखने वाले लोग विवाह को एक नहीं बल्कि सात जन्मों का बंधन मानते हैं। परंतु पाश्चात्य संस्कृति के लोगों की विचारधारा उनके रहन.सहन के संपर्क में आने के कारण भारतीय समाज में भी विवाह विच्छेद की घटनाएं तीव्र गति से हो रही है।